- 1

Q.no. 13

M.A.I. Sem II

History CC-5

History of Women Study

उन्नीसवीं सदी में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए सामाजिक सुधारकों द्वारा किए गए प्रयासों की विवेचना

उन्नीसवीं शताब्दी में जहाँ एक ओर महिलाओं की शोचनीय दशा अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गई थी, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज में सुधार आन्दोलनों द्वारा इस स्थिति में सुधार के प्रयास होने लगे। धर्म और समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों और अंधविश्वासों को दूर करने हेतु जो एक नई चेतना उत्पन्न हुई उसे पुनर्जागरण की संज्ञा दी गई। डॉ० रामगोपाल शर्मा का कथन है कि "इस पुनर्जागरण के मूल में दो प्रकार की प्रेरणा काम कर रही थी — पाश्चात्य तथा यूरोपीय सभ्यता से सम्पर्क तथा प्राचीन भारत की गौरवमय संस्कृति परम्परा।

अंग्रेजी भाषा तथा शिक्षा पद्धति के माध्यम से भारतीय समाज में एक नवीन बुद्धिजीवी मध्यवर्ग का उदय हुआ, जिसने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का अध्ययन कर हिंदुत्व को संशोधित रूप प्रस्तुत किया तथा पाश्चात्य आधुनिक विचारों को भी अपनाया। सुधारवादी प्रयास जन आन्दोलनों के रूप में हुए तथा कुछ प्रबुद्ध भारतीयों द्वारा व्यक्तिशः रूप में भी हुए, जो इस प्रकार से

1. <u>ब्रह्म समाज</u> — (1828 ई०)-

ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय का जीवन काल (1772-1833) था। उन्होंने 1828 ई० में ब्रह्मसमाज की स्थापना की जिसका उद्देश्य हिंदू धर्म का तर्क-सम्मत संशोधित स्वरूप प्रस्तुत करना था तथा सामाजिक एवं धार्मिक अंध-विश्वासों एवं कुरीतियों को दूर करना था।

राजा राममोहन राय ने समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियाँ जैसे बाल-विवाह, बहु-विवाह स्त्री-अशिक्षा, सती प्रथा जैसे अनेक कुप्रथाओं के विरोधी थे। उनके प्रयास से लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने सती प्रथा को 1829 ई० में कानून बनाकर अवैध घोषित कर दिया। वे स्त्री-शिक्षा तथा स्त्रियों के समानाधिकारी के पक्षपाती थे। वे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के समर्थक थे। कलकत्ता में उन्होंने हिंदू कॉलेज की स्थापना की।

उनकी मृत्यु के बाद ईश्वर चन्द्र विद्यासागर देवेन्द्र नाथ ठाकुर तथा केशव चन्द्र सेन ने संकल्पों को आगे बढ़ाया। सेन के आग्रह पर सरकार ने "सिविल मैरेज एक्ट" बनाया। इसके अनुसार वर तथा वधू की विवाह हेतु आयु क्रमशः 18 वर्ष व 14 वर्ष नियत कर दी गई।

2. <u>आर्य समाज</u> — (1875 ई०)-

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद (1814-1883) ने 1875 ई० में की।

इन्होंने समाज में व्याप्त बाल-विवाह, बहु-विवाह, पर्दा प्रथा का विरोध किया।

Scanned with CamScanner

उनके द्वारा रचित ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में महिलाओं को समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिए जाने पर बल दिया गया। वे अंग्रेजी शिक्षा पद्धति तथा प्राचीन शिक्षा पद्धति में वैदिक शिक्षा को अनिवार्य अंग मानते थे। उन्होंने लाहौर में "ऐंग्लो वैदिक कॉलेज" की स्थापना की।

3)- <u>थियोसोफिकल सोसाइटी</u> -

कर्नल एच०एस० अलकाट व सुश्री एच० पी० ब्लेव- तास्की ने मद्रास के निकट अडयार नामक स्थान पर 1886 ई० में थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की।

उन्होंने सभी धर्मों का समन्वय कर विश्व-बंधुत्व की भावना के विकास पर बल दिया। बाद में श्रीमती एनी बेसेंट ने इस आंदोलन को काफी प्रगति दी। उन्होंने भारतीय महिलाओं की मानसिक हीनता एवं दासता को दूर करने का प्रयत्न किया तथा उनमें राजनीतिक चेतना जागृत की।

4) <u>रामकृष्ण मिशन (1897 ई०)</u> -

स्वामी विवेकानन्द (1862-1902) द्वारा 1897 ई० में स्थापित 'रामकृष्ण मिशन' संस्थान ने वेदांत प्रचार के अतिरिक्त समाज सुधार एवं मानव सेवा के लिए अनेक कार्य किए। इन्होंने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया तथा धार्मिक अंधविश्वासों एवं कुरीतियों का विरोध किया। उनका कथन था कि "संसार की सभी जातियाँ नारियों का समुचित सम्मान करके

Scanned with CamScanner

ही महान हुई है। जो जाति नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी है और न आगे उन्नति कर सकेगी" उन्होंने नारियों की स्वतंत्रता पर बल दिया और स्त्री शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया।

5. <u>प्रार्थना समाज</u> -

इसकी स्थापना ~~श्री~~ केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से की गई। प्रार्थना समाज ने जाति-प्रथा और बाल विवाह का विरोध किया तथा स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन किया।

इन समाज सुधारकों के अतिरिक्त कुछ ~~प्रबुद्ध~~ महान विभूतियों ने भी महिलाओं की स्थिति सुधारने का प्रयास किया। ~~जैसे~~ -

<u>सर सैयद अहमद खाँ</u> - ने मुसलमानों को शिक्षित करने व महिलाओं को बहु विवाह, बाल विवाह तथा पर्दा-प्रथा जैसे अनेक कुरीतियों से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न किया। 1875 ई० में ~~उन्होंने~~ अलीगढ़ में "मोहम्डन एंग्लो ओरिएन्टल कॉलेज" की स्थापना की जो आगे चलकर 1890 ई० में अलीगढ़ विश्वविद्यालय बना।

<u>महादेव गोविन्द रानाडे</u> - ने उन सामाजिक प्रथाओं की घोर निंदा की जो स्त्रियों को अशिक्षित ही बनाए रखती थी और जिनकी दृष्टि में उन्हें शिक्षा देना बुरा था। उन्होंने कहा कि नारी

Scanned with CamScanner

अशिक्षा एक सामाजिक समस्या है। इसके रास्ते की ~~कठिनाईयां~~ अधिक रुकावट आर्थिक कठिनाई नहीं बल्कि लोकमत को जाग्रत करने का है। उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह का पक्ष लिया तथा 1866 ई० में स्थापित विधवा पुनर्विवाह समिति (Widow Women Association) के सदस्य बने।

बाल गंगाधर तिलक (1856-1920) -

इन्होंने सामाजिक सुधारों के प्रत्येक महत्वपूर्ण पहलू को स्पष्ट किया। वे समाज सुधार के मामले में किसी भी प्रकार के बल प्रयोग के विरुद्ध थे। उनका कहना था कि सुधारों के पक्ष में सामाजिक चेतना पैदा की जाए, इनको कानून द्वारा जनता पर थोपा न जाए।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर -

ये महिला कल्याण के प्रबल समर्थक थे। इन्हीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप 26 जुलाई 1956 को "हिन्दू विडोज मैरिज एक्ट" पारित हुआ जिसके अनुसार विधवा विवाह को कानून सम्मत बना दिया गया और विवाहित विधवाओं के बच्चों को भी वैध बच्चों का दर्जा मिल गया।

रमाबाई -

पंडिता रमाबाई ने बंगाल में कुलीन वर्ग की महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें अत्याचारों से मुक्ति दिलाने का आंदोलन आरंभ किया। इन्होंने 'आर्य महिला समाज' नामक

Scanned with CamScanner

संस्था स्थापित की तथा 1882 ई० में हन्टर कमीशन की समक्ष नारी शिक्षा विकास के संबंध में सुझाव रखे। 1889 ई० में बम्बई में निराश्रित विधवाओं के लिए उन्होंने 'शारदा सदन' नामक संस्था स्थापित की।

इस प्रकार उपरोक्त समाज सुधारवादी प्रयासों के फलस्वरूप समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु जनमत जाग्रत हुआ और इस दिशा में काफी प्रगति हुई।

— 00 —

H. Kumar

DSPMU

Scanned with CamScanner